बस मुझे मालूम है

इन्सान सिर्फ पादरी के ही सामने कनफेशन करता है प्रमोद!

धनबाद छोड़ने से पहले पिताजी ने कहा थाःबड़ी मुश्किल से तुम्हारा एडमिशन दानापुर मे हो पाया है। वहॅ इन्टरमीडिएट की क्लासें शुरू हो चुकी हैं। हायर सेकेन्ड्री मे तुम अच्छा नही कर पाये। न जाने तुम्हारा दिमाग कहॅ भटक गया था!पटना मे मेरे एक दोस्त रहते हैं श्री ओमप्रकाश जी। उन्हे मैने फोन पर तुम्हारे बारे मे बता दिया है। ये उनके नाम एक चिट्ठी भी है। जाते ही उनसे मिल लेना। महीने की पहली तारीख को जा कर उनसे चार सौ रूपये ले लिया करना। ये तुम्हारे खाने पीने और रहने का खर्च है। धोबी नाई साबुन तेल जैसे खर्चो के बाद भी हर महीने तुम्हारे पास तीस चालीस रूपये जेब खर्च के लिए बच जायेंगें। थोड़ा किफायत से ही रहना। दानापुर मे मेरे एक और दोस्त हैं श्री बालेश्वर प्रसाद जी। जिस कॉलेज मे तुम्हे दाखिला मिला है, उसी मे वो इकनामिक्स पढाते हैं। वही तुम्हारे लोकल गार्जियन है। वो ओमप्रकाश जी को भी जानते हैं। लड़खड़ाने के बाद अगर तत्काल इन्सान अपना कदम नही साध लेता है, तो समझ लो कि वो जीवनपर्यन्त सम्हल नही पायेगा। इसे तुम अपने मन मे एक गॉठ की तरह बॉध लेना।

आज पहली बार मैने अपना घर छोड़ा है। रह रह कर धनबाद की याद आ रही है। तमाम प्रतिबन्धों के बावजूद मै वहॅ कितना स्वतन्त्र था। यहॅ तमाम स्वतन्त्रताओं के बावजूद मै अपने आप को कितना प्रतिबन्धित महसूस कर रहा हूॅ!तीन घन्टे से ऊपर होने को आये हैं और मैने अभीं तक अपना सूटकेस भी नही खोला है। स्टेशन पर बालेश्वर अंकल सपत्नि मुझे लेने आये थे। दोपहर का खाना भी इन्ही के घर पर खाया। सारी बातों के बावजूद मुझे ऐसा लग रहा था, जैसे ये एक सम्पन्नता जबर्दस्ती अपने पर थोंपे हुए हैं। अक्सर हम भूल जाते हैं कि हमारी संस्कृति मे बलात पाश्चात्य संस्कृति घूसेड़ी ही नही जा सकती। सारी बातें पैबन्दों जैसी लगती हैं। हमारे साथ इनकी इकलौती बेटी बीना भी खाने बैठी थी। उसके प्यार का नाम बीनू है। एक आम रूप और कद की सॉवली सी लड़की। पटना के बी एन कॉलेज मे इतिहास पढती है और वहीं हॉस्टल मे रहती है। बात बात मे अन्ग्रेजी मे इठलाती है। बालेश्वर अंकल फूले नही समाते हैं। बालेश्वर अंकल की पत्नी शारदा भी मेरे ही कॉलेज मे हिन्दी की क्लासें लेती हैं।

बालेश्वर अंकल स्वयम मुझे हॉस्टल तक ले कर आये थे। इसके वार्डेन श्री त्रिवेणी प्रसाद उनके अच्छे मित्रों मे से हैं। अभीं तक मै अपने रूममेट से नही मिला हूॅ। मुझे बस इतना पता है कि वो भागलपुर का रहने वाला है और उसका नाम भोलानाथ तिवारी है। मुझे ये भी पता नही है कि वो कैसा है! किस शक्ल सूरत का है!पर उसके मेज पर पड़ी हनुमान जी की तश्वीर अगरबत्तियों की राखों से नहाई पड़ी है। ईश्वर मे इतनी आस्था रखता है, इतना बुरा तो नही ही होगा।

फर्निचरों के नाम पर मुझे एक चौकी, एक मेज, एक कुर्सी और एक आलमारी मिली हुई है। किसी औसत दर्जे के बढई के हॉथों बनी आम के लकड़ी की बनी। दीवारों और फ्लोर के पलस्तर जगह जगह से झड़े पड़े है। न तो दरवाजे पर कोई पर्दा है न खिड़कियों के सीसे सावूत हैं। दूर दूर तक खेत फैले हुए है। गेहूॅ के फसलों से लदे ये खेत एकबारगी मेरा मन ही मोह लिये। सामने का वो नाला कोई नाला नही है। वो एक नहर है, जिसमे गन्गा नदी का पानी बहता है। यहॅ के टवायलेटों का बड़ा बुरा हाल है। गॅवई लड़के हैं। जहॅ मन करता है, हग आते हैं। नहाने वाले कमरों का तो और भी बुरा हाल है। जहॅ देखों फर्श पर बाल ही बाल। भींगे फर्श पर एकाध तिलचिट्टे भी धमाल मचा रहे हैं। वाशबेसिनों पर लाईफब्याय साबुन के बालों समेत टिकियें, दस बारह बालों के टुथब्रश, नीम के दतवनों की जीभछोलनियॉ, जिधर देखो उधर ही लोगों के खॅखार। अरगनियों पर छींटों के लन्गोटे पसारे पड़े हुए हैं। जहॅ हम अपने बदन के विकार साफ करते हैं उसे ही गन्दा छोड़ कर क्यों चल देते हैं!मेस भी देख आया। रसोई मे एक पंडित जी कन्ठी पहने मिले थे। कुछ ही दॉत सलामत थे उनके मुॅह मे। बड़े प्यार से महाराज कहके मिले। वो सिर्फ मैथिली मे ही बातें करते हैं फिर भी वो मुझसे जो कुछ कहना चाहते थे, मै समझ गया। शाम का खाना उन्ही के निरीक्षण मे कुछ लड़के बनाने मे लगे हुए थे। बड़ी बड़ी परातों मे ऑटा गूॅथा जा रहा था। अल्यूमिनियम की एक बड़ी सी देगची मे आलु फूलगोबी और टमाटर की सब्जी बन रही थी। एक बड़े से परात मे प्याज, टमाटर और खीरा कटा पड़ा था। पास ही एक बड़ी सी थाल मे हरी धनिया, हरी मिर्चे और कागजी निब्बू धरे पड़े थे। इस मेस के फर्श को ही नही, बल्कि यहॅ की बेंचों और टेबूलों को भी रोज नहलाया जाता है। ःनाबालिग बालक हैं। बड़ा जूठन गिराते हैः

इस दानापुर मे मुझे एक वर्ष की अवधि काटनी है। शाम के सात बजे शाम के खाने पर जब मै मेस मे गया, तो वो खचाखच भरा पड़ा था। सिर्फ एक मेज थी, जिससे लगी एक कुर्सी खाली थी। मुझे इस तरह घूरा जा रहा था, जिस तरह एक जेल मे आने वाले नये कैदी को। मुझे देखते ही पंडित जी दॉत चियारे भागे आये। फटाफट अपनी गमछी से मेरे बैठने की जगह साफ किये। नमस्कार दोस्तों! कह कर मै अभीं बैठा ही था कि पंडित जी अल्यूमिनियम की एक दबी पिचकी थाली मे परथनों से सनी दो रोटियॉ, एक कलछूल सब्जी और एक मुट्ठी प्याज टमाटर और खीरे की सलाद ले आये। एक अल्यूमिनियम की ही पिचकी गन्दी ग्लास मे वो पानी भी दे गये। मै उनसे जब भी कुछ कहता हूॅ, ऑहू ऑहू कहते हैं। इसके जरिये वो मुझसे क्या कहते हैं मै नही जान पाता हूॅ। शायद ये उनका तकिया कलाम है। मेज पर पॉच जन बैठे खाना खा रहे थे।

तभी एक दूसरी मेज से एक लड़का उठ कर आया और अपना हॉथ बढाते हुए अपना नाम सफी बताया

ःकैसा लग रहा है तुम्हे दानापुर!आज ही आये हो न!मिलते रहेंगे!किसी बात की परेशानी हो तो बताना।

इतना सुदर्शन लड़का अब तक मुझे अपने जीवन मे न टकराया था। कितनी तहजीब थी उसकी बातों मे!हल्की फूल्की दाढी मूछो के बावजूद भी वो दुनिया के तमाम लड़कियों से सुन्दर लगा था। देखते ही देखते वो मेरा मन मोह लिया था।

गई रात तक मै अपनी चौकी पर लेटा सफी के ही बारे मे सोचता रहा।

एक दिन कॉलेज के अहाते मे वो मुझसे अकस्मात टकरा गया। मै ऐसे भी कई दिनो से उससे मिलना चाह रहा था, पर मिल नही पा

रहा था।उसी ने कैन्टिन मे मुझे चाय का आमंत्रण दिया।वो मुझसे दो वर्ष बड़ा भी है और सिनियर भी. पर मुझे ऐसा लग रहा था. जैसे मै अपनी बड़ी बहन या फिर अपने से बड़ी उम्र की किसी लड़की के साथ बैठा होऊँ।कैन्टिन मे बैठे तमाम लोग हमे घूरे जा रहे थे।वो वाकई एक बेहद खूबसूरत लड़का है।बैठा मुझसे मेरे और मेरे परिवार के बारे मे पूछता रहा।बातों ही बातों मे मुझे ये पता चला कि वो गया का रहने वाला है. पर उसके अब्बा मदारबोनी मे पर्सनल डायरेक्टर है।धनबाद भी वो कई बार जा चुका है।वहॉ के कई इलाकों को वो जानता है।

दानापुर आये मुझे एक महीने हो चले हैं।हर दिन ही पिताजी को कोसा करता हूॅ।मुझे लाके पटके भी तो कहॉ!बी एस कॉलेज दानापुर मे।भूमिहारों की बस्ती मे।सफी के अलावे ढंग के दो चार ही लड़के मुझे अब तक पूरे कॉलेज मे मे दिखे थे।एक अनपढ गॅवार बिन्देसरी सिंह इस कॉलेज के संस्थापक हैं।कॉलेज के अहाते मे मेनगेट के अन्दर घूसते ही एक सजी सजाई फूलवारी मे उनके संगमरमर की मूर्ति खड़ी है।एक सफेद चादर अपने कन्धे पर डाले।उनकी मूर्त्ति देख कर सब यही सोचते है कि वो अपने जमाने मे एक बहुत बड़े दार्शनिक रहे होंगे

बिन्देसरी सिंह खुद लिख लोढा पढ पत्थर थे. पर विद्दा को बड़ी अहमियत देते थे।भोजबीर झऊँसा तिहारी रंगौली गॉवों के अलावे दूसरे कई गॉवों की जमीने उनके परिवार के पास थीं।संयुक्त परिवार मे सौतेले और चचेरे कूल ग्यारह भाई थे।परिवार मे वो सबसे बड़े थे।उनके अपने सात बेटे थे।उनके भाईयों का भी बड़ा फैला परिवार था।परिवार के सारे बच्चे कम से कम एक चिट्ठी तो पढने लिखने के काबिल हो जायें. सोच कर वो अपने बड़े से दालान मे एक स्कूल खोल रखे थे।इस स्कूल के एकमात्र शिक्षक बिजौरी परसाद बिन्देसरी सिंह के बईठके मे ही रहते थे।वो स्वभाव के बड़े चिड़चिड़े थे. पर उन्हे बच्चों की मॉओं की तरफ से बच्चों पर हॉथ उठाने की सख्त मनाही थी।पढाई के नाम पर बच्चों को क से कंकड़ी ख से खीरा के आगे कुछ आया ही नही।यदा कदा बिन्देसरी सिंह झल्ला कर उन्हे ग का ज्ञान देते हुए गदहा कहा करते थे।इनके समस्त परिवार से सरस्वती मैया रूठी बैठी थीं।मैने अक्सर देखा है कि जिस खानदान पर देवी लक्ष्मी की अपरम्पार कृपा होती है. उससे सरस्वती मॉ रूठ जाती हैं।इन्ही रूठी सरस्वती जी को मनाने के लिए सन इक्यावन मे बाबू बिन्देसरी सिंह ने इस कॉलेज की संस्थापना अपने नाम से की।सुना है इस परिसर मे उनके जमाने मे उनके कोल्डस्टोरेज हुआ करते थे।अहाते मे उन्होने सरस्वती मॉ का अलग से एक मन्दिर भी बनवाया और उस मन्दिर मे उन्होने उन्हे वीणावादिनी के रूप मे विराजा।उसके बावजूद भी सरस्वती मैया वहॉ अपने पगधूल का एक कण भी भेजना जरूरी नही समझीं।इस कॉलेज मे बिन्देसरी सिंह की वजह से नब्बे प्रतिशत अध्ययन और अध्यापन के क्षेत्र मे भूमिहार जाति के लोग हैं।इन्ही लोगों का इस विद्दालय मे प्रभुत्व है।मेरे हॉस्टल मे भी नब्बे प्रतिशत भूमिहार छात्र रहते हैं।सारे के सारे गॅवई लंठ रंगदार।कॉलेज जाते हैं तो लड़कियों पर सिटियॉ बजाने।बाजार जाते हैं तो गरीबों को तंग करने या फिर दुकानदारों से मुफ्त मे सामान खरीदने।हॉस्टल मे भी ये बाहर से आये अच्छे परिवारों के लड़कों को अपना जरखरीद गुलाम समझते हैं।

दो दिनो से पिताजी डी पी एड की कॉपियॉ जॉचने पटना आये हुए है।वो जब भी पटना आते है. ओमप्रकाश अन्कल के यहॉ ठहरते है।ओमप्रकाश अंकल बाराबंकी रोड पर रहते हैं।इसी रोड पर उनके खेलकूद के सामानों का शोरूम है. जिसकी देखरेख उनके बड़े भाई करते हैं।ओमप्रकाश अंकल की दो जुड़वॉ बेटियॉ है।दोनो एक दूसरे से इतनी मिलती जुलती है कि उनके माता पिता तक धोखा खा जाते हैं।पहचान के लिए रीना अपनी दॉई कान मे बाली पहनती है और टीना बॉई कान मे।ये लोग पंजाबी है।बड़ा मिलनसार परिवार है।कल शाम को पिताजी से मिलने पटना गया था।मै एक शेयर्ड टमटम से गया था।दस सवारी रहे होंगे।घोड़ा भी कोई खास तगड़ा तो नही था. फिर भी वो हमे चालीस मिनटों मे पटना पहॅुचा दिया।बाराबंकी रोड का तो ये हाल था कि इस पर लोग एक दूसरे के सर पर चल रहे थे।जैसे बाढ का पानी तंग गलियों मे समाता है उसी प्रकार तीन दिशाओं से आते लोग ही नही. बल्कि रिकसा. स्कूटर सायकल टैक्सी टमटम बोझा उठाये मजदूर ठेलागाड़ियॉ इस संकरे रोड मे समाये जा रहे थे।समय किसी के पास नही था।सभी को किसी न किसी बात की जल्दी थी।ओमप्रकाश अंकल का घर जरा अन्दर जा कर एक गली मे है।इस गली मे भी दोनो ओर दुकाने ही दुकाने है. फिर भी यहॉ मेन रोड की बनिस्पत कम कोलाहल है।शाम का खाना वहीं खाया।साफ सूथरा मेज. साफ धूली प्लेटें और ग्लासें।खाना साधारण होते हुए भी बड़ा स्वादिष्ट था।बड़ा नपा तुला मसाला व्यवहार मे लाया जाता है।जिस तरह हमारे यहॉ किसी मेहमान के सामने दस तरह की सब्जियॉ थोक के भाव मे परोस कर रख दी जाती है. वैसा पंजाबी परिवारो मे नही देखा जाता है।राजमा और उरद की दाल. साथ मे मक्खन का एक टुकड़ा. एक छोटी सी कटोरी मे दही और नान।न कोई चटनी और न कोई अॅचार।पिताजी मेरे लिए मॉ के हॉथों का बुना एक पूरी बॉह का स्वेटर और भूने बेसन के लड्डू साथ लाये थे।उनसे ज्यादे बातें न हो पाई।बताने के लिए ऐसे भी कुछ खास नही था।मै हर सप्ताह नियमित रूप से एक पत्र धनबाद भेज दिया करता हूॅ।

मुझे दानापुर आये तीन महीने से ऊपर होने को आये है. पर मेरा कोई अन्तरंग दोस्त अभी तक नही बना है।मै किसी के कमरे मे आज तक नही गया. पर जिस मेज पर बैठ कर मैने पहले दिन खाना खाया था. उसी पर आज तक खाता हूॅ।हम छ जन हैःमेरा रूममेट भोला. हृदयेश. अरूण बजरंग. रवि और मै।ये सभी मुझसे एक साल सिनियर हैं।भोला भागलपुर का. हृदयेश कलकत्ता. अरूण मॅुगेर. बजरंग शाहाबाद और रवि रॉची का रहने वाला है।ये सारे के सारे बी एस सी प्रिवियस मे पढते हैं।दानापुर मे दो वर्षो से रह रहे हैं।दोपहर का खाना हम साथ नही खा पाते हैं. पर शाम का खाना प्रायः इकट्ठे ही खाते हैं।मुझे और रवि को छोड़ कर बाकियों का बचपन गॉवों मे ही गुजरा है।खाने पर ये अक्सर अपने गॉवों की बातें करते हैं।ऐसे ही एक दिन खाने पर पता चला कि बजरंग शादीसुदा है. पर उसकी पत्नी अपने मायके मे ही रहती है।प्रोपर शाहाबाद मे उसके ससुर कचहरी मे पेशकार हैं।शहर मे अपना निजी मकान है।वहीं किसी डिग्री कॉलेज से उसकी पत्नी बी ए कर रही है।रवि कहने लगाःयही वजह है कि बजरंग का एक पॉव दानापुर मे और दूसरा शाहाबाद मे रहता है।सुन कर बजरंग खिखियाने लगा।बजरंग के खिखियाने मे उसका सारा शरीर साथ देता है।

एक दिन शाम के खाने पर बजरंग हमारे सामने एक प्रस्ताव रखा।कहने लगा कि पंडितजी के घास भूसे से तो हमारी जान बनने से रही।क्यो न हम सुबह क्लास जाने से पहले एकाध मील की दौड़ लगायें और फिर मोती की दुकान पर जाकर एक ग्लास गरम ताजा दूध पीयें।एक रूपये मे एक ग्लास खॉटी दूध बेचता है और वो भी इलायची के साथ।इस उम्र मे कोई अपनी सेहत के लिए कुछ करे

या न करें. पर सेहतमन्द सभी बनना चाहते हैं। सेहत के प्रति इस आम झुकाव से मै भी बरी नही था. पर मै ये भी जानता था कि सुबह की नींद कितनी मीठी होती है. खासकरके जाड़े के सुबह की। बड़ी हिम्मत करके मै भी इस दल मे शामिल हो गया। भोला बातें बेहद कम करता है। क्लासों के बाद जब देखो. पढता ही मिलता है। एक पॉव अपनी कुर्सी पर रखे उसके उँगलियों की मैलें छुड़ाता न जाने क्या क्या रटता घोंटता रहता है!उसे अपने घर से शायद उतने पैसे नही आते हैं!जब तव शाम के नाश्ते पर हम मोती के ढावे पर जा कर समोसे. कचौरियॉं खा आते हैं. पर वो हमारे साथ कभीं नही आता। एक बार मै उसके पिताजी से मिल चुका हूँ। बिना परिचय के दूर से भी देख कर हर कोई ये कह सकता है कि वो पेशे से शिक्षक हैं। बस उनके हॉथ मे छड़ी की कमी थी। गॉव से पता नही क्या क्या भोला के लिए पोटलियों मे बॉध के लाये थे!इन पोटलियों को भोला बड़ा सम्हाल के एक टीन के वक्से मे रखता है। भोला के पास कपड़े लत्ते भी बस काम भर के है. पर उसके पास एन सी सी की कई खाकी पैंट और कमीजे हैं। हायर सेकेन्ड्री के बाद उन्हे वापस ही नही किया। पहनने के लिए दानापुर साथ ले आया। हमारे दल की एक खास बात ये है कि इसे किसी की अमीरी गरीबी से रत्ती भर भी लेना देना नही है। सभी एक दूसरे की मदद को तत्पर रहते हैं।
बजरंग और रवि एक दूसरे के रूममेट हैं। इन दोनो से मेरी बड़ी पटती है। मै अक्सर इनके कमरे मे जाने लगा हूँ। मेरे कमरे मे ये दोनो भोला की पढाई की वजह से थोड़ा कम आते हैं। कुछ ही दिनो का परिचय है. फिर भी अक्सर बजरंग हमे शाहाबाद आने का निमंत्रण देता है।
कल रवि के संग पटना गया था। वहॉ लिबर्टी मे देवानन्द की हरे रामा हरे कृष्णा देखी। बड़ी अच्छी लगी। गाने भी बड़े सुन्दर थे। पिक्चर देखने के बाद हमने मसाला दोसा भी खाया। शाम को हम बजाय हॉस्टल के सामने उतरने के दानापुर बाजार मे जा कर उतरे. फिर पैदल ही दानापुर छावनी की तरफ जा बढे। दानापुर का ये इलाका कितना साफ सूथरा है! हर ओर शान्ति ही शान्ति व्याप्त है। कॅटीले तारो के घेरे मे तमाम बैरक बने हुए हैं। यदाकदा इन बैरकों के बरामदों फौजी जवान भी बैठे या गप्प मारते दिखे। अलग अलग पलटनों के झन्डे एक साफ सूथरे घेरे मे लहराते नजर आये। इस झन्डे के दोनो तरफ पहरा देते दो फौजी जवान सीना ताने संगीन वाली राईफल ताने नजर आये। जब तब हमारे ही उम्र के लड़के और लड़कियॉं हमारी बगल से अपनी स्कूटर उड़ाते सर्र से निकल जाते थे। आफीसर सेक्टर की तो बात ही निराली थी। सजे सजाये बनगले. गेटों पर पहरा देते सन्तरी. सजा सजाया लॉन. धूप से बचने के लिए तनी छतरियॉं. उनके नीचे बैठे लोग। इन अफसरों की पत्नियॉं और बेटियॉं किसी हीरोइनो से कम न लगती थीं। कसे कसाये कपड़े. करीने से कटे बॉब कट बाल. नितम्ब तक बॅधी तंग साड़ियॉं. बिना दुपट्टों के कुर्ते। कितने निराले इनके ठाठ बाट हैं!
जब धीरे धीरे अन्धेरा बिखरने को आया. तो एक बारगी पूरी छावनी रोशनी मे नहा गई। हम आहिस्ते आहिस्ते वापस लौट पड़े। दानापुर बाजार की भी अपनी एक रौनक है। खाने पीने की जितनी गुमटियॉं और ठेले इस बाजार मे है और कहीं क्या होंगे!यहॉं की गुमटियों और ठेलेवाले गैसबत्तियों या लालटेनों का प्रयोग नही करते। ये बकायदा बिजली के लट्टू जलाते हैं और ग्राहकों के बैठने के लिए दो चार बेंचे भी रखते है। छोले भठूरे से लेकर चाट की दुकानें. अन्डे आमलेटों से लेकर समोसे कचौरियों की दुकानें. नान मुर्गे से लेकर मछली और कटलेटों की दुकाने. पान बिड़ी सिगरेटों की गुमटियॉं। सात भी नही बजे होंगे और इस बाजार मे तील रखने तक की जगह नही रही होगी। रवि बताने लगाः पास मे ही देशी शराबों के कई ठेके है। शाम के छ बजे खुल जाते है और रात के बारह बजे तक खुले रहते हैं। पास ही पासियों की एक बस्ती है। हर झुग्गी मे ताड़ी बेची जाती है। ः नौ बजे के बाद तुम्हे इस बाजार मे एक भी इन्सान होश मे नही मिलेगा। तभी मेरी नजर सफी और वृन्दा पर पड़ी। एक गुमटी के सामने खड़े ये दोनो सिगरेट पी रहे थे। पास ही सफी की स्कूटर खड़ी थी। सिल्क की एक धारदारी कमीज और उसी रंग का मफलर गले मे लपेटे सफी सिगरेट के धुँए उड़ाये जा रहा था। कितना फब रहा था सफी को उसके कमीज का रंग!
मै सफी को आदाब करने बढने ही वाला था कि पीछे से रवि ने मेरी कमीज पकड़ लीः चलो वापस चलते है। इन लोगों से जरा दूर ही रहा करना। गन्ध मचा कर रखे हुए हैं।
ःकिस तरह का गन्ध!
ःलोग ये समझते हैं कि सफी वृन्दा का दोस्त है. पर वो वृन्दा का दोस्त नही बल्कि उसका कैप्ट है।
ःकैप्ट से तुम्हारा क्या मतलब है!
ःकैप्ट का मतलब तुम नही समझते हो क्या!
ःसमझता क्यों नही हूँ।
ःक्या समझते हो!
ःबताया तो तुम्हे। सफी के लिए वृन्दा पोसेसीव होगा। मिडिल स्कूल मे श्रीप्रकाश दोस्त शेखर को किसी दूसरे के साथ हॅसते बतियाते देख लेता था. तो सारी क्लास सर पर उठा लेता था। हम सभी शेखर को श्रीप्रकाश का कैप्ट कहके उसे चिढाया करते थे।
ःबात सिर्फ यहीं तक रहती. तो कोई बात न थी. पर इनके बीच यौनिक सम्बन्ध भी हैं। ये पति पत्नी की तरह रहते हैं। सफी मे वृन्दा की जान बसती है। जरा कोई सफी को छू कर तो दिखा दे. सारे दानापुर मे आग लगा देगा वृन्दा। जब मै दानापुर आया था. तब सफी मेरा रूममेट हुआ करता था। वृन्दा उसे देखा क्या कि उस पर फिदा हो गया। इस सम्बन्ध की शुरूआत हल्के स्तर की बोली ठोली से शुरू होकर छेड़छाड़ पर आई। सफी को ये बातें बिल्कुल पसन्द न थी। आये दिन सफी का मुँह सूजा रहता था। वृन्दा की डर की वजह से हॉस्टल का एक भी लड़का सफी की सहायता के लिए आगे नही आया। ये जो अपने वार्डेन त्रिवेणी प्रसाद जी हैं न. वो जाति के नाई हैं। दिन रात वृन्दा उनकी मॉ बहन करता रहता है। इस कॉलेज के जो संस्थापक हैं . वृन्दा उन्ही के खानदान से है। उसे कॉलेज की फीस भी नही देनी पड़ती है। मेस मे भी वो एक पैसे नही देता। ऊपर से दो वक्त का खाना कमरे मे मॅगवा कर खाता है। यहॉं से दानापुर बाजार तक उससे कोई एक पैसे नही लेता। उसके कई दूर और नजदीक के रिश्तेदार इस कॉलेज मे लेक्चरार या दूसरे पदों पर आसीन हैं। साला मेज पर चाकू गाड़ कर इम्तहान देता है। सिक्सर वगैरह भी रखे हुए है। भॉग गॉजे का भी धन्धा करता है। ये हमारे हास्टल का वार्ड सर्वेन्ट. जिसे हम काशी दादा कहके बुलाते हैं. वो दिन भर उसकी सेवा मे लगे रहते हैं। उनका एक पॉव हॉस्टल

मे और दूसरा मोती के ढाबे मे होता है।दिन भर उसके कमरे मे गफलिया जमती है।चाय समोसे काशी दादा लाते रहते हैं।जो दूसरा वार्ड सर्वेन्ट लहना है.उसके जिम्मे वृन्दा के कमरे की सफाई.कपड़े लत्ते धोबी आयरन जैसे काम हैं।

एकाध महीना ही सफी मेरे संग रहा होगा।फिर वो वृन्दा का रूममेट बन गया।आये दिन की मारपीटों से उसकी जान तो बची ही .साथ साथ वो वृन्दा की अर्जित सुविधाओं मे भी आधे का हिस्सेदार बन गया।एकाध दूसरे भेंड़िये जो सफी को दोस्त बनाने के लिए गुर्रा रहे थे.देखते ही देखते शान्त हो गए।जैसे जहाँगीर के जमाने मे उसकी आड़ मे नूरजहाँ का हुक्म चलता था.वैसे ही आज के दिनो मे हमारे हॉस्टल मे सफी का हुक्म चलता है।सफी जैसे लड़को को यहाँ लवन्डा कहा जाता है।ये लवन्डे दो तरह के होते है।एक साड़ी चोली पहन कर नाचते हैं और दूसरे लोगों के बिस्तर गर्म करते हैं।ये बीमारी दानापुर मे ही नही.पूरे बिहार मे एक महारोग की तरह फैली हुई है।इसी मे लोगों का मनोरंजन है।इस लवन्डेबाजी मे अपनी शान समझते हैं।

आज पहली बार मेरा वृन्दा से झगड़ा हुआ।पता नही किससे उसे पता चला कि मेरी हैन्डराइटिंग बड़ी अच्छी है।न जाने कहाँ से और किसकी कॉपियाँ लेकर मेरे पास आया और कहने लगा कि साथ मे कुछ खाली कॉपियाँ भी हैं।सब कुछ हूबहू इन खाली कॉपियों मे उतारना है।

ःतुम उन्हे खुद क्यों नही करते!पूछने पर कहने लगा कि दानापुर मे रहना है कि नही!

ःक्यों!दानापुर तुम्हारे बाप का है!

ःतुम वृन्दा को नही जानते हो का!सामान बॉध के धनबाद भाग लो।दानापुर मे बिना वृन्दा से पूछे एक पत्ता तक नही खड़खड़ाता .कहके उसने मेरे गालों पर एक ऐसा झन्नाटेदार चन्नाटा मारा कि मेरे ऑखों के सामने एक धूप्प अन्धेरा छा गया।इस तरह का घनघोर चन्नाटा अब तक मुझे किसी ने नही मारा था।

विवश बैठा मै गई रात तक वृन्दा की कॉपियाँ उतारता रहा।एक बार भोला उठ कर मेरे पास आया और पूछने लगाःवृन्दा से डरते हो क्या!

ःडरता तो मै भगवान से भी नही हूँ.पर मै बड़ी मुसीबत मे हूँ भोला।बड़ा डरा धमका कर हमे हमारे मॉ बाप हमे परदेश भेज देते हैं और ये डरपोक बीमार चूहे हमे डराने चले आते हैं।न जाने गालो पर मारे गये तमाचे सीधे हृदय को क्यों जा लगते है!भूले नही भूलाते हैं।

ठीक सामने जामुन पेंड़ की एक डाल पर बने घोंसले से एक गौरईया अपने एक चूज्जे को नीचे ढकेल दी।एक कमजोर बीमार अशक्त बिन बालों का चूज्जा अपने कमजोर पंखों के बावजूद फिर से उड़ कर उसी जामुन की एक डाल पर जा बैठा।थोड़ा सुस्ता कर वो एक दूसरी डाल पर जा बैठा।पता नही हमारे मॉ बाप हमे उड़ने के लिए इस तरह के खुले कन्धे और डैने क्यों नही देते हैं!घर से निकाल कर पंख तो काट ही लेते हैं साथ साथ कन्धों पर अपने तमाम अरमान भी लाद देते हैं।आये दिन मेरा मन उड़ कर जटायू की तरह वृन्दारूपी रावण का मुँह नोचने को करता है।इससे पहले कि मै बालेश्वर अंकल को जा कर वृन्दा के बारे मे बताता.सफी को इसका पता चला।दूसरे दिन भागा कमरे मे आया और मुझे सान्तवना देने लगा।ःभूल जाओ कल की बात को।वृन्दा तुम्हे भविष्य मे कभीं परेशान नही करेगा।मैने उससे कह दिया है।

सुबह की दौड़ हम निर्विरोध लगा रहे हैं।वीक एन्ड मे बजरंग तो अपने ससुराल चल देता है।बचता है रवि।उसी के संग मेरा वीक एन्ड गुजरा करता है।रवि के पास समय ही समय है।धनबाद के पाटलिपुत्र मेडिकल कॉलेज मे उसके एडमिशन की बात चल रही है।पिताजी रॉची मे बाटरबोर्ड मे अध्यक्ष हैं।पन्द्रह बीस हजार डोनेशन उनके लिए नाखूनो की मैल की तरह है।दानापुर मे वो बस अपना समय काटने आया है।पटना मे कोई नई फिल्म लगी नही कि हॉथ धोकर पीछे पड़ जाता है।

एक दिन जब कॉलेज से वापस आया.तो देखा कि हॉस्टल के सामने एक नई नवेली बग्गी खड़ी है।उससे जुता सजा सजाया सफेद रंग का घोड़ा.तमाम तामझामों से सजा अपनी शान बघारे जा रहा है।इस तरह का शानदार घोड़ा शायद मैने एकाध बार किसी सर्कस मे या किसी फिल्म मे ही देखा था।हॉस्टल के तमाम लड़के इस बग्गी को घेरे खड़े थे।पता चला कि वृन्दा के एक दोस्त की शादी है।पास के ही किसी गॉव मे उसकी बारात आनी है।उस बारात मे महाबली वृन्दा सिंह अपनी नूरजहाँ सफी के साथ इस बग्गी से तशरीफ ले जायेंगे।खिड़की से देखा कि आगे आगे सिल्क का कुर्त्ता पैजामा पहने वृन्दा और उसके साथ इसी तरह के कपड़े पहने सफी आ कर बग्गी मे बैठे।बग्गी के साई को भी एक पीले रंग का कुर्त्ता भेंट मे मिला हुआ था।दाढी साढी करीने से कटवा कर ये साई भी अपने को लखनऊ का कोई नवाब समझ रहा था।सामने के खेलने वाली मैदान के धूल उड़ाती ये बग्गी परिशर के पक्के रास्ते पर आई।कॉलेज का मेनगेट वहाँ का दरबान पहले से ही खोल रखा था।देखते ही देखते ये बग्गी ऑखों से ओझल हो गई।

कभीं कभीं मै अकेले मे बैठा सोचा करता हूँ कि ये जो कुछ भी सफी के साथ हो रहा है क्या उसकी मर्जी से हो रहा है!अगर ये सब उसकी मर्जी से हो रहा है.तो मिया बीवी राजी वाली बात हो गई।अगर ये सब उसकी मर्जी के बगैर हो रहा है.तो मेरी समझ मे ये नही आता था कि उसने अपना विरोध बन्द क्यों कर दिया!वृन्दा की ताकतें क्या इतनी ज्यादे हैं!सफी को तो कब का दानापुर छोड़ कर चल देना था।आज या कल तो ऐसे भी उसे दानापुर छोड़ना है।कब तक उसके मॉ बाप उसे इस कामुकों की बस्ती मे रहने देंगे!कौन सा पहाड़ खोद लेगा वो बी एस कॉलेज की डिग्रियॉ लेकर!

सिगरेट भॉग गॉजा शराब ताड़ी और न जाने किन किन कूऐवों से सफी जा घिरा है!इन कूऐवों को अगर भुला भी दिया जाये.तो उस कुँए से वो अपने को कब और कैसे बाहर निकाल सकेगा जिसमे वृन्दा उसे लिए आये दिन उतर जाता है।

सफी को वृन्दा अपने गॉव भी लिवा जाता है।अपनी पत्नी के साथ भी सहवास करता है और सफी के साथ भी।पत्नी को वो निवाहता है.पर सफी से प्यार करता है।पता नही सफी के माता पिता क्यों सोये पड़े हैं!

बालेश्वर अंकल के घर के ठीक सामने एक महन्त का आश्रम है।कहने को वो महन्त कहलाता है.पर वो दानापुर का जाना माना रंगदार है।हजारों की वसूलियॉ लोग बाग बिना कहे उसके चरणों पर रख जाते हैं।इस आश्रम मे नही भी तो बीसों कमरें होंगे.जो वो दानापुर के छोटे मोटे बदमाशों को दे रखा है।यहाँ एक कमरा वृन्दा भी किराये पर ले रखा है।अहाते मे ही एक चंडिका माई का

मन्दिर है. पर उन्हे कभीं जगाया नही जाता।धूल धूसरित मकड़जालों से आच्छादित इस मंदिर की घन्टियॉ तो नही बजती. पर आये दिन कुँए की जगत पर लवन्डों का नाच होता है।दानापुर के सारे नामी गरामी कामुक वहॉ आ जूटते है।सबों के बैठने के लिए अलग से खाटें दी जाती हैं।सभी अपने अपने लवन्डों के संग आते हैं.लेकिन जो लवन्डा वृन्दा के पास है.वो किसे मयस्सर होगा।चाहे जिस तरह के भी कपड़े सफी पहन ले.सदैव चौदहवीं का चॉद लगता है।वृन्दा फूले नही समाता है।एक दिन मैने इस महन्त को भी सफी को चूमते देखा था।गई रात तक महफिलें सजी रहती हैं।मन ही मन वालेश्वर अंकल भिनभिनाते रहते हैं।
शुरू के दिनो मे मुझे सफी पर गुस्सा आता था।अब मुझे उस पर तरस आने लगा था।
दुर्गापूजा की छुट्टी मे रवि अपने माता पिता से मिलने रॉची गया हुआ है।मेरे दूसरे मित्र भी अपने अपने घर गये हुए हैं।मै धनबाद इस वजह से नही गया.क्योंकि मेरे माता पिता दीदी से मिलने नागपुर गये हुए हैं।हॉस्टल लगभग खाली हो चला है।बहुत जिद्द करने पर मुझे बजरंग के संग उसके ससुराल आना पड़ा है।ये ग्वालों की बस्ती है।शाहाबाद के मेन जंक्शन से लगभग सटी हुई।बजरंग के ससुर के अलावे बस्ती के दूसरे लोगों के पास गाय भैसें हैं और यही उनके जीविकोपार्जन का साधन भी है।कच्चे रास्ते.कच्ची झोपड़ियॉ गोबरों की गन्ध.पर एक से एक सुन्दर बालायें ःवाकई मे कृष्ण के राधा की नगरी वृज।बजरंग के ससुर के पास झोपड़ी नही है।उनके पास अहाते के साथ एक तीन कमरे का पक्का मकान है।दीवारों पर अभी पलस्तर नही चढा है।छतों की ढलाई भी नही हुई है।अहाते के ठीक बीचो बीच एक पक्के घिराव के साथ चॉपा कल है।एक पक्के उँचे गमले मे तुलसी का एक पौधा लगा हुआ है जिसके ताखे मे दिन के उजाले मे भी एक दिया जलता रहता है।मकान के तीनो कमरे बजरंग को दहेज मे मिले फर्निचरों से सजे पड़े हैं।न जाने कितने नये पुराने कलैन्डर दीवारों पर फड़फड़ाते रहते हैं।कमरों के ताखों पर मेलो से खरीदे देवी देवताओं की मूर्त्तियॉ धूल धूसरित खड़ी बैठी या लेटी पड़ी हैं।यहॉ खाना पीना भले कंडियों पर बनता है.पर बजाप्ता कुर्सियों पर बैठ कर खाया जाता है।बजरंग के ससुर धोती कुर्त्ता और गान्धी टोपी पहना करते हैं।बजरंग की सास बिना ब्लाउज की चोली पहना करती हैं जिन्हे वो अपने ऑचल से छुपाये रखती थीं।बजरंग की पत्नी सलवार कुर्त्ते मे मुझे पहली झलक मे आठवीं दसवीं कक्षा की कन्या लगी थी।स्वभाव की बड़ी मिलनसार है।हल्का फूल्का मजाक भी कर लेती है।सिर्फ वो ही नही.बल्कि बजरंग समेत उसके सास ससुर दिन रात मेरी सेवा मे लगे रहते हैं।
मै बजरंग की ससुराल मे तीन दिन रहा।चलते वक्त बजरंग की पत्नी मुझे एक प्लास्टिक का थैला भी पकड़ा दी।थैले मे मेरे लिए कुर्त्ते पैजामे के कपड़े थे और उनकी सिलाई के लिए पन्द्रह रूपये भी।बजरंग की सास का पॉव छूकर उसकी पत्नी को प्रणाम करके मै बजरंग और उसके ससुर साथ स्टेशन बढ चले।इस बस्ती की शायद ही ऐसी कोई झोपड़ी रही होगी.जिसके सामने एकाध गोपियॉ आकर खड़ी न हो गई हों।मन ही मन इन्हे नमस्कार करता मै अपने को कृष्ण कन्हैया से कम थोड़े ही समझ रहा था।ये विदाई कई दिनो तक मेरा मन मथती रही।
ये सन बहत्तर और तिहत्तर की बाते हैं।दूसरे शब्दों मे मै आप लोगों को इन्ही सनों मे लिखे डायरी के चन्द पन्ने पढ कर सुना रहा हूँ।कुल मिला जुला कर मै दानापुर मे ग्यारह महीने रहा।इसे एक लम्बी अवधि नही कही जा सकती है.पर इस अवधि मे मैने तमाम चरित्र कमाये।इतने चरित्र कमाये कि मेरा झोला छोटा पड़ गया।जितने मन से मैने दानापुर मे चरित्र बटोरा.उतना शायद कहीं नही .गोकि यहॉ मै इन्टरमिडिएट के इम्तहान मे अंक बटोरने आया था।
दानापुर छोड़ने से एक दिन पहले सफी भी मेरे कमरे मे मुझे अल्विदा कहने आया था।मन के किसी न किसी धरातल पर मै सफी को पसन्द करता था।पसन्द ही नही.उसके लिए मेरे मन मे सम्मान भी था।बड़ी आत्मीयता से मै उसे मिला थाःभाई साहब!पता नही मै कब आपसे मिलूँगा.पर संयोग को किसने जाना है!अपना ख्याल रखियेगा।मै इस बात को कभीं नही भूलॅगा कि आप जब भी मुझसे मिले प्यार से मिले।ये मेरे लिए एक धरोहर है.जिसे लिए मै जा रहा हूँ।
बड़े प्यार से सफी मेरे गालों को सहलाते हुए कहा थाःखुदा हाफीज!फिर वो अपने ऑसू छुपाता मेरे कमरे से बाहर निकल गया।
समय के साथ मेरे दानापुर के तमाम साथी और परिचय न जाने कहॉ खो गये!दानापुर के बाद मै बनारस आ गया हूँ।यहॉ दोस्तों की एक बहुत बड़ी पलटन पहले से ही मेरी अगवानी के लिए खड़ी मिली।एकाध महीना ही शायद मै अकेला रहा होऊँगा.फिर मै उनमे खो गया और बनारस का होकर रह गया।न जाने क्यों मेरे जीवन मे हर आने वाला नया शहर पुराने शहर की यादों को मेटने मे लग जाता है!मुझे नही लगता है कि मेरे माता पिता का मुझे एक मेधावी पुत्र के रूप मे देखने का सपना इस जन्म मे साकार हो पायेगा!उनके सपनों के लिए मै अपने दोस्तों की बलि नही चढा सकता था।
तीन फरवरी दो हजार दस।
रात के दो बजने को आये हैं।मेरे बगल मे लेटा रवि खर्राटें मार रहा है।हमने खाने से पहले एकाध पैग भी लगाये थे.पर मुझे नींद नही आ रही है।रास्ते मे बातों ही बातों मे सफी रिजवी का न जाने क्यों कर जिक्र आया!हम गाड़ी की पिछली सीट पर बैठे थे।गाड़ी एक मुसलमान ड्राइवर चला रहा था।अचानक रवि हिन्दी छोड़ अन्ग्रेजी मे बताने लगाःजहॉ तक मुझे पता हैःआज कल सफी रिजवी यू पी एम पी के बार्डर पर कहीं है।खदानो के ही क्षेत्र मे पर्सनल डिपार्टमेन्ट मे ।सुना है काफी ऊँची पोस्ट पर है।तिहत्तर मे मुझे धनबाद के पाटलिपुत्रा मे जगह नही मिली।झख मारके मुझे दानापुर मे एक साल और रहना पड़ गया था।
ये सन चौहत्तर की बात है।गर्मियों के दिन थे।वृन्दा के छोटे भाई का विवाह बेतिया मे तय हुआ था।पटना से एक पूरी ट्रेन ही बेतिया गई हुई थी।हमारे हॉस्टल से भी कई लड़के इस बारात मे गये हुए थे।सफी भी साथ गया हुआ था।बारात को वापस ट्रेन से ही लौटना था।सारी बारात तो वापस आ गई.पर वृन्दा का कहीं पता ही नही चल रहा था।वृन्दा बेतिया से वापस नही लौटा है.ये लोगों की नोटिश मे दो दिन बाद आया।पहले एक सप्ताह तक उसकी पटना और दानापुर मे खोज होती रही।उसके भाई के ससुराल वाले उसे बेतिया मे ढूँढते रहे.पर वृन्दा का कहीं पता ही नही चल रहा था।हार कर घर वालों को पुलिस मे खबर करनी पड़ी।
मदरौसा के कहीं आस पास रेल की पटरियों पर एक नवजवान की लाश पाई गई थी।गले मे बेला चमेली का माला.चुन्नटदार कुर्त्ता गुलाब और केवड़ा जल से सुगन्धित।किसी बारात से लौट रहा था अभागा।नशे मे धुत्त ताजी हवा खाने बेचारा बोगी का दरवाजा

धकिया के खोला ही था कि अपना संतुलन खो बैठा और रेल की पटरियों पर जा गिरा।लाश को तो जला दिया गया था.पर उसके कपड़े लत्तों की शिनाख्त के बाद पता चला कि ये लाश किसी और की नही.वृन्दा की थी।
अब पूछताछ का फायदा भी क्या था!फिर पूछा भी किससे जाता!जिसे जाना था.वो जा चुका था।बी एस कॉलेज के आडिटोरियम मे वृन्दा के मौत को लेकर एक शोक सन्ध्या का आयोजन हुआ था।वृन्दा जैसे मेधावी और समाजिक छात्र के इस तरह असमय गुजर जाने के अफसोस मे कॉलेज के तत्कालीन प्रिन्सिपल साहब गुणानन्द चौधरी खून के ऑसू बहा और पी रहे थे।सफी ने तो दाढी न बनाने की कसम ही खा रखी थी।भरी जवानी मे ही बेचारा विधवा जो हो गया था।
वृन्दा के गॉव झॉऊ मे तो ऑसुओं का ऐसा सैलाब आया था कि हमारे हॉस्टल के पीछे वाले नहर मे बाढ ही आ गई थी।ये नहर तो तुम्हे याद है न प्रमोद!
ःइस वृन्दा को ऐसी ही मौत मिलनी थी रवि।जस करनी तस भोगन दाता!अगर मुझे वो जवानी के दिनो मे दानापुर से बाहर कहीं टकरा गया होता.तो मै ही उसे जान से मार दिया होता।जान से नही.लेकिन उसे पीटता मै जरूर।लेकिन इस वक्त सबसे ज्यादे गुस्सा मुझे सफी पर आ रहा है।
इशारे से ही रवि मुझे कान अपने मुॅह के पास लाने को कहा।
सरक कर मैने अपना बॉया कान उसके मुॅह के पास कर दिया।
ःवृन्दा ने अपना संतुलन थोड़े ही खोया था।उसके पीठ पर कूद कर किसी ने करारी लात मारी थी।
ःपर किसने!उसके किसी दुश्मन ने!
ःकिसी दुश्मन ने नही।ःतुम्हारे रिजवी साहब ने।
ःतुम्हे कैसे मालूम!
ःबस मुझे मालूम है।
ःफिर भी! कैसे तुम्हे ये सब मालूम है!
ःइन्सान किसी पादरी के सामने ही कनफेशन करता है प्रमोद!
ःसफी ने खुद बताया था क्या!
एक अजीब सी रहस्यमई मुस्कान रवि के चेहरे पर पूत गईःमै भी स्नात मुस्कारने लग पड़ा।

डायरी की ये कुछ पन्ने मै अपने बचपन के एक साथी को समर्पित कर रहा हॅू.जो मुझसे रूठा हुआ है.पर उपक्रम ये कर रहा है कि वो मुझसे रूठा हुआ नही है।मेरे लिए मित्रता और प्रेम मन की एक ही अवस्था है।इन दोनो मे मैने बस एक ही अन्तर पाया हैःजो क्षमा प्रेम के पास है.वो मित्रता के पास नही है।जब एक मित्र रूठ जाता है .तब वो बस रूठ ही जाता है।जब भी मै उसके करीब लौटता हॅू.तो मुझे ऐसा लगता है.जैसे मै एक सदा के लिए बन्द कर दिये दरवाजे पर थपकियॉ दे रहा होऊॅ!न जाने उसका मन कब पिघलेगा!

प्रमोद कुमार सिंह
बर्लिन शुक्रवार चौबीस सितम्बर दो हजार दस